ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 4, April 2017 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

# डॉ० वेदप्रकाश बटुक के काव्य में राजनीतिक मूल्यों के विघटन का चित्रण

डा॰ भावना देवी
हल्दुखाता, कोटद्वार
पौड़ी गढ़वाल उत्तराखंड

पनकोड-246149

डॉ० वेदप्रकाश बटुक का नाम हिंदी के प्रवासी साहित्यकारों की प्रथम पंक्ति में लिया जाता है। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग पाश्चात्य देशों में रहते हुए व्यतीत किया। परंतु फिर भी वे लगातार अपने देश के संपर्क में रहे और यहां की राजनीति में हो रहा मूल्यों का विघटन उन्हें व्यथित करता रहा। उनका जन्म स्वतंत्रता से पूर्व हुआ था, इसलिए उन्होंने अपने बड़े भाई के साथ– साथ और भी अन्य देशभक्तों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हुए देखा था। इसीलिए स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक मूल्यों के विघटन के कारण जब उन्होंने देखा कि नेताओं को देश से और जनता से कोई मतलब नहीं है तो इससे उन्हें बहुत बुरा लगा। उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में राजनीतिक मूल्यों के विघटन का चित्रण किया है–

1*" नेता लोग कभी ना बनेंगे
भगतसिंह
न अपने बच्चों से कहेंगे
वे बनें बलिदानी
नेता लोग कभी गांव नहीं लौटेंगे
किंतु वे वातानुकूलित भवन में
बैठ कर देंगे औरों को संदेश
लौट चलो गांव, जहां बसती है
देश की आत्मा
वे दूसरों के बच्चों से कहेंगे

कि देश के लिए कटाना शीश
करता है जीवन को सार्थक
बनो शहीद–ए–आजम
उन्हें पता है कि
अगर भुनाया जाता है
एक भगत सिंह का बलिदान
सब कुछ पाने को
तो असंख्या भगत सिंह
कितना देंगे उन्हें कुबेर का धन
अलकापुरी का राज
वे जानते हैं
कि उनका
उनके वंशजों का
कल्याण
सिर कटाने में नहीं
कटे हुए
सिरों को भुनाने में है।

'कल रात के अंधेरे में' संकलन में संकलित उक्त पंक्तियां। वर्तमान राजनीति के स्वार्थपरता को उद्घाटित करती हैं।

नेताओं की स्वार्थपरता को उजागर करती हुई बटुक जी की ये पंक्तियां देखिए–

2* " खुशी किस बात की मना रहे हो दोस्त?
इस बात की
कि पेट की आग को बुझाने को गरीब
तुम्हारी नीतियों के कारण
मौत के मुंह में चला गया।

और उसकी मौत को देकर
शहादत का नाम तुम भुनाओगे
देशभक्ति के गोंद से
और भी सुदृढ़ता से
कुर्सी से चिपक जाओगे
या खुशी इस बात की है
कि उसी जवान की तरह
सीमा पार का जवान भी
बलि हो गया है देशभक्ति की भांग
पीकर
तानाशाहों की घोषित
आजादी के लिए
उसे दुश्मन का रुतबा देकर
हमारे जवानों ने किया है
उसके खून से
तुम्हारा राजतिलक
दोनों पक्षों में
जिन गरीबों के नाम में
खड़ा होता है प्रजातंत्र का जंग लगा
पाया
वे ही मारे गए हैं
शासक तो कल फिर मिलेंगे गले
पिएंगे एक दूसरे की सेहत के जाम
करेंगे शांति की घोषणा
दूरभि संधि पर हस्ताक्षर।"

बटुक जी द्वारा लिखित उक्त पंक्तियां दिखातीं हैं कि किस प्रकार राजनेता केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए

अपने अपने देशों के नौजवानों को युद्ध के नाम पर बलिदान देने को भेज देते हैं,जबकि वास्तव में उनको देश से कोई मतलब है और ना ही उन नौजवानों से जो उनकी प्रेरणा से अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं।

वर्तमान राजनीति में असत्य और अनीतियां कुछ इस प्रकार घुल मिल गई हैं कि नेता अब मानवता के विनाश पर तुल गए हैं–

3* " आज कल मुझे भय लगता है
हर किसी झंडे से,
मानवता के रक्त में रंगे
मनुज के कफन–रूपी
वसन में घुसे हुए हर एक डंडे से,
राष्ट्रभक्ति–धर्मपरायणता का
उद्घोष करते हुए
राजनीति धर्म के पंडे से
जिसके हाथ में हो गया है
अभिलेख
पदलोलुप साम्राज्यवादियों की
कालकूट महत्वाकांक्षाओं का
शक्तिहीन निर्दोष
कंकालों की हत्याओं का,
भूमि के साथ
दिलों के बंटवारों का,
युद्ध को जन्म देते युद्धों का,
विनाश हाहाकारों का,
हिंसात्मक शुद्रतम आसुरी
वृत्तियों का,
असत्य का, अनीतियों का।"

राजनीतिक मूल्यों के विघटन के कारण आज देश की दशा ऐसी हो गई है कि जनता के लिए भी अच्छा नेता

चुनना एक बहुत मुश्किल काम है क्योंकि वास्तव में कोई भी नेता अच्छा है ही नहीं । अब जो भी नेता चुनकर सत्ता में आता है वह केवल अपना ही स्वार्थ पूरा करता है जनसेवा कोई नहीं करता ।अपने गजल संग्रह 'आदमी आज भी समस्या है' में वेदप्रकाश बटुक जी लिखते हैं।–

4* " नया कुछ और दाँव है यारों
वही पर हाव–भाव हैं यारों
नाग जायेंगे, सांप आयेंगे
कैसा इसमें चुनाव है यारों
यर्की करते हैं, फिर से मरते हैं
अपना–अपना स्वभाव है यारों
मौत का हो रहा है अब सौदा
जिंदगी तो लुभाव है यारों
तंत्र सुनता कहां किसी की कब
जन–वचन कांव–कांव है यारों"

बटुक जी लिखते हैं कि आजकल के नेताओं के अंदर से सत्य तो छोड़िए स्वाभिमान तक भी कूच कर गया है। वह सत्ता प्राप्त करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं। इसके लिए भले ही उन्हें किसी के सामने हाथ जोड़ने हों या किसी के पैर पड़ने हो। परंतु सत्ता प्राप्त करने के बाद वे एकदम पूरी तरह बदल जाते हैं तथा जिनके कभी उन्होंने सत्ता प्राप्त करने के लिए पैर छुए थे उनकी तरफ वे देखते भी नहीं उनकी समस्याएं सुनना या उन्हें हल करने का प्रयास करना तो बहुत दूर की बात है–

5* " जिसने किये वायदे
वचन, आश्वासन
प्यार–मनुहार
सत्ता पाने से पूर्व
भिखारी सा व्यवहार
हाथ जोड़ने, पैर छूने का नाटक

करते हैं वे बन विनय के अवतार
वही होकर सत्तासीन
भूल जाते हैं सब
जन, समाज ,देश
मद में हो जाते हैं अंधे
और अब
भिखारी हो जाते हैं
जन, समाज, देश
उनके सपनों के टूटने में
नहीं लगते
कुछ पल भी ।"

डॉ० वेदप्रकाश बटुक ने अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में त्यागपूर्ण राजनीति का दौर भी देखा था । उनके अपने अग्रज स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वर्षों वर्षों जेल में रहे थे। परंतु स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक मूल्यों में इतनी अधिक गिरावट आई कि नेता केवल अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए सत्ता में आने का प्रयास करने लगे। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा लगाई गई इमरजेंसी ने तो उनके सारे ही विश्वासों के बांध तोड़ दिए। इमरजेंसी के दौरान ऐसे बहुत से लोगों को जेल भेजा गया, जिन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। ऐसे ही एक व्यक्ति थे डॉ० वेदप्रकाश बटुक के बड़े भाई मास्टर सुंदरलाल। उनके जेल जाने से बटुक जी बहुत अधिक आहत हुए तथा देश की राजनीति से उनका विश्वास पूरी तरह उठ गया। आपातकाल के दौरान लिखी गई कविताओं के अपने संकलन 'कैदी भाई बंदी देश' की एक कविता में बटुक जी लिखते हैं–

6* " बंधु,
यह तो तुमने कहा था बहुत बार
कि शहीदों की हर मज़ार
आजादी में मेला लगाएगा
पर यह नहीं कहा था तुमने

कि आजादी गुंडों को दिलाएगी
तख्त
और तुमसे
मांगती रहेगी
पवित्र खून
और शहादत।"

इसी संकलन में संकलित बटुक जी की एक और कविता देखिए–

7* " कैसी है यह आज़ादी
कि जब
इतना घिघियाया सा मन
गिड़गिड़ाकर मिलने को
दो क्षण
अपने निर्दोष
कैदी भाई से
समझने लगा
कि आज का जीवन
सार्थक हो गया है
(नाली में लेटे हुए)
कीड़े– सा ।"

डॉ० वेदप्रकाश बटुक कहते हैं कि नेता चुनाव आने से पहले देश की सेवा करने का वादा करते हैं परंतु वास्तव में देश की सेवा करने में उनकी कोई रुचि नहीं होती न ही उनको देश से कोई लगाव होता है । वे तो केवल कुर्सी हड़पने के लिए ऐसे ऐसे हथकंडों का इस्तेमाल करते हैं ।

अपने हाइकु संग्रह घृणा का व्यास में भी डॉ वेद प्रकाश पाठक ने अनेक स्थानों पर राजनीतिक मूल्यों के विघटन का चित्रण किया है–

8* " देश की सेवा
हड़पने को कुर्सी
पाने को मेवा।"

राजनीतिक मूल्यों के विघटन को देखते हुए बटुक जी कहते हैं कि आजकल के नेता केवल भ्रष्टाचार करते हैं। वे गरीबी मिटाने के नाम पर गरीबों को ही मिटा देते हैं। नेताओं का चरित्र राजनीतिक मूल्यों का आधार होता है। परंतु आजकल के नेताओं का चरित्र बिल्कुल भी अनुकरणीय नहीं है । अब देश को अपने जीवन से ऊपर रखने वाले नेता नहीं रहे। आजकल के नेताओं के लिए अपना स्वार्थ ही सबसे बड़ा है,उसी की पूर्ति के लिए वे सब कुछ करते हैं।

9*" मुझे दिलाओ मत आज
याद उन महामहिमों की
जो शनि की तरह छाए हैं
देश के भाग्य पर
जिनकी वाणी से टपकता है सुधा–रस
किंतु जिनके मानस में भरा है
लबालब विष
जो गरीबी मिटाने के नारे लगाते हैं
और गरीबों को मिटाते हैं
जो स्वर्ग के सपने दिखाते हैं
और रसातल में ले जाते हैं
जो बाहर से उन भवनों से ही हैं
धवल और उज्ज्वल
जिनमें वे रहते हैं
किंतु जिन का अंतर उतना ही काला है
जितने कि वे कारनामे

वे षड्यंत्र, वे व्यूह
जो उन प्रासादों में रचे जाते हैं
जिनका हाथ है भ्रष्टाचार के हर हवाले में
चटनी के तत्वों से जो
रमे हैं हर घोटाले में
जो बेचते हैं देश को
जयचंद–मीरजाफर – से
विभीषण बनकर गद्दी पाना ही
ललक है जिनके जीवन की।"

डॉ० वेदप्रकाश बटुक का मानना है कि नेताओं के चरित्र का राजनीतिक मूल्यों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। राजनीतिक मूल्य जन साधारण के जीवन को भी बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। इसलिए नेताओं के चरित्र स्वच्छ होने आवश्यक हैं ताकि पुनः उच्च राजनीतिक मूल्यों की स्थापना की जा सके।

राजनीतिक मूल्यों के विघटन से न केवल देश की राजनीति और शासन–प्रशासन अपितु सामान्य जनजीवन भी पतन की ओर अग्रसर हो जाता है। इसलिए जो भी अपने आपको थोड़ा भी देशभक्त मानता है तो उसे अपने जीवन में पूरी तरह से ईमानदारी का पालन करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 – डा॰ वेदप्रकाश बटुक – 'कल रात के अंधेरे में' – निरुपमा प्रकाशन, 506 /13 शास्त्री नगर,मेरठ (उत्तर प्रदेश), वर्ष –2020 , पृष्ठ संख्या– 100

2 – डॉ॰वेदप्रकाश बटुक – 'इतिहास की चीख '– भारतीय साहित्य प्रकाशन, 286, चाणक्यपुरी,सदर,मेरठ– 250001, वर्ष – बैशाखी–2000, पृष्ठ संख्या– 114–115

3 – डॉ॰ वेदप्रकाश बटुक – 'मानवता का अरण्य रोदन – भारतीय साहित्य प्रकाशन,286, चाणक्यपुरी, सदर, मेरठ–250001, वर्ष – वैशाखी 2007, पृष्ठ संख्या–56–57

4 – डॉ॰ वेदप्रकाश बटुक– 'आदमी आज भी समस्या है' (गजल संग्रह ),भारतीय साहित्य प्रकाशन, न्यू आर्य नगर, जेल रोड, मेरठ –250004, वर्ष 2010, पृष्ठ संख्या –71

5 – डॉ॰ वेदप्रकाश बटुक – 'कल रात के अंधेरे में' – निरुपमा प्रकाशन,506/13, शास्त्री नगर, मेरठ, (उत्तर प्रदेश वर्ष), वर्ष–2020, पृष्ठ संख्या– 19

6 – डॉ॰ वेदप्रकाश बटुक – 'कैदी भाई बंदी देश'– अलंकार प्रकाशन, 3611 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, वर्ष – 2नवंबर,2006,पृष्ठ संख्या 20

7 – उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 56

8 – डॉ॰ वेदप्रकाश बटुक – 'घृणा का ब्याज'(हाइकु– संग्रह) –निरुपमा प्रकाशन, 506/13,शास्त्री नगर, मेरठ,(उत्तर प्रदेश), वर्ष –2017, पृष्ठ संख्या –62

9 – डॉ॰ वेदप्रकाश बटुक – 'इतिहास की चीख'– भारतीय साहित्य प्रकाशन, 286, चाणक्यपुरी, सदर,मेरठ– 250001, वर्ष–वैशाखी 2000, पृष्ठ संख्या– 74